No. of Printed Pages : 3

LSM-02

2010

प्रश्न-पत्र-II निबन्ध एवं आलेखन

Paper-II ESSAY AND PRECIS WRITING

निर्धारित समय : तीन घण्टे] *[पूर्णांक : 200*

Time allowed : Three Hours] ***[Maximum Marks : 200***

निर्देश : *(i)* ***सभी*** *प्रश्न अनिवार्य हैं ।*

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके अन्त में इंगित हैं ।

(iii) प्रश्न संख्या 1 का उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में दिया जा सकता है ।

(iv) पत्र-लेखन में अपना नाम, पता अथवा अनुक्रमांक न लिखें । यदि अनिवार्य हो, तो क्ष, त्र, ज्ञ लिख सकते हैं ।

Notes : *(i)* ***All*** *questions are compulsory.*

(ii) Marks allotted to each question are indicated at its end.

(iii) Question No. 1 can be attempted either in Hindi or in English.

(iv) In letter writing don't write your name, address and roll no. If necessary candidates can write x, y, z.

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** शीर्षक पर लगभग **400** शब्दों में निबंध लिखिए : **50**

(अ) साहित्य समाज की पुनर्सृष्टि है ।

(ब) प्रजातंत्र और जनजागृति ।

(स) सूचना प्रौद्योगिकी और मानवीय ऐक्य ।

(द) भारत के पड़ोसी राष्ट्र : सम्बन्धों का स्वरूप ।

(य) उत्तराखंड के पर्यटक स्थल : उनकी धार्मिक एवं प्राकृतिक महत्ता ।

(र) प्राकृतिक आपदाओं में प्रशासन की भूमिका ।

Write an essay on any **one** of the following topics in about **400** words :

(a) Literature is recreation of Society.

(b) Democracy and people-awakening.

(c) Information Technology and Human Unity.

(d) The neighbour countries of India : Nature of their relationship.

(e) The tourist places of Uttarakhand : Their religious and natural importance.

(f) The role of administration in natural calamities.

2. व्यक्तित्व के विकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक होती है । स्वतन्त्रता निरंकुशता या इच्छा दासता नहीं है, उसका वास्तविक अर्थ स्वाधीनता है । यदि 'स्व' केवल इच्छामय है तो स्वाधीनता स्वच्छन्दता या स्वेच्छाचारिता मात्र होगी, किन्तु कर्म का मूल संकल्प है और संकल्प विकल्प पर आश्रित होता है । विकल्प के पीछे जिस तत्त्व का न्यूनाधिक मात्रा में प्रकाश रहता है, वह विवेक या बुद्धि है । विवेक-युक्त विकल्प पर आश्रित संकल्प से प्रेरित कर्म में ही स्वतंत्रता है । मनुष्य अपने विवेक के अनुसार अपने को बना सके, अपने आदर्शों का अनुसरण कर सके, अपने व्यक्तित्व का विकास अपनी मूल चेतना के अनुसार कर सके, इसलिए उसे स्वतंत्रता चाहिए । यह सही है कि आन्तरिक और वास्तविक स्वतंत्रता मनुष्य के लिए निसर्गसिद्ध है और उसकी विवेकिता से अभिन्न है । इस दृष्टि से 'स्वतंत्रता का अधिकार' मनुष्य के लिए उन बाहरी परिस्थितियों को द्योतित करता है, जिनमें उसे अपने विवेक के अनुसार कर्म करने में बाहरी प्रतिबन्धों से मुक्ति हो । इसके अतिरिक्त यह भी स्मरणीय है कि आन्तरिक विवेक का भी शिक्षा, संगति आदि के संदर्भ में विकास होता है । अपने को पहचानने के लिए, या अपने को खोजने के लिए मनुष्य को एक मानवीय परम्परा का उत्तराधिकारी होना पड़ता है । मानवीय स्वतंत्रता की सिद्धि के लिए इस प्रकार पहले तो बाहरी प्रतिबंध या अंकुश का अभाव होना चाहिए, दूसरे शिक्षा-दीक्षा होनी चाहिए, तीसरे विवेक का आन्तरिक उदय होना चाहिए ।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । **5**

(ख) गद्यांश का सारांश लगभग **300** शब्दों में लिखिए । **30**

(ग) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए । **15**

3. उत्तराखंड के शिक्षा सचिव की ओर से राज्य के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को सम्बोधित एक परिपत्र का प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें उच्च शिक्षा की गुणवत्ता एवं सुधार के लिए किए गए उपायों की जानकारी माँगी गई हो । साथ ही गुणवत्ता की आवश्यकता के विषय में राज्य की नीतियों का भी उल्लेख हो । **50**

4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : **25**

बेचन एक गरीब मजदूर था । वह एक कारखाने में काम करता था । उसकी एक पत्नी तथा चार बच्चे थे । आय कम होने के कारण वह अपने परिवार का भरण-पोषण ठीक ढंग से नहीं कर पाता था । उसे रुपए उधार लेने पड़ते थे । वह परेशान रहता था । वह जिस कारखाने में काम करता था, वहाँ के अभियंता के पास एक सोने की घड़ी थी, वह दोपहर भोजन के लिए मेज पर घड़ी छोड़कर चला जाता था । एक दिन जब मध्यावकाश के समय अभियंता बाहर गया, बेचन ने उसकी घड़ी चुरा ली । घड़ी चुराने के बाद उसे ऐसा लगा कि किसी व्यक्ति ने उसे घड़ी चुराते देख लिया है । वह काँपने लगा और जल्दी से जेब से घड़ी निकालकर मेज पर रखकर चला गया । वह खुश था, क्योंकि बुराई पर अच्छाई की विजय हुई थी ।

5. निम्नलिखित अंग्रेजी गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 25

I believe that every man is born in the world with certain natural tendencies. Every person is born with certain definite limitations which he cannot overcome. From a careful observation of these limitations the law of Varna was deduced. It established certain spheres of action for certain people with certain tendencies. This avoided all unworthy competition. Whilst recognizing limitations, the law of Varna admitted of no distinctions of high and low; on the one hand, it guaranteed to each the fruits of his labours, and on the other, it prevented him from pressing upon his neighbours. This great law has been degraded and fallen into disrepute. But my conviction is that an ideal social order will only be involved when the implications of this law are fully understood and given effect.